उड़ती चारपाई

इटली की एक सच्ची परीकथा

आंजेलो फानेल्ली

चित्र: चेचिलिया ओरसोनी

इतालवी से अनुवाद: मेघना पलशीकर

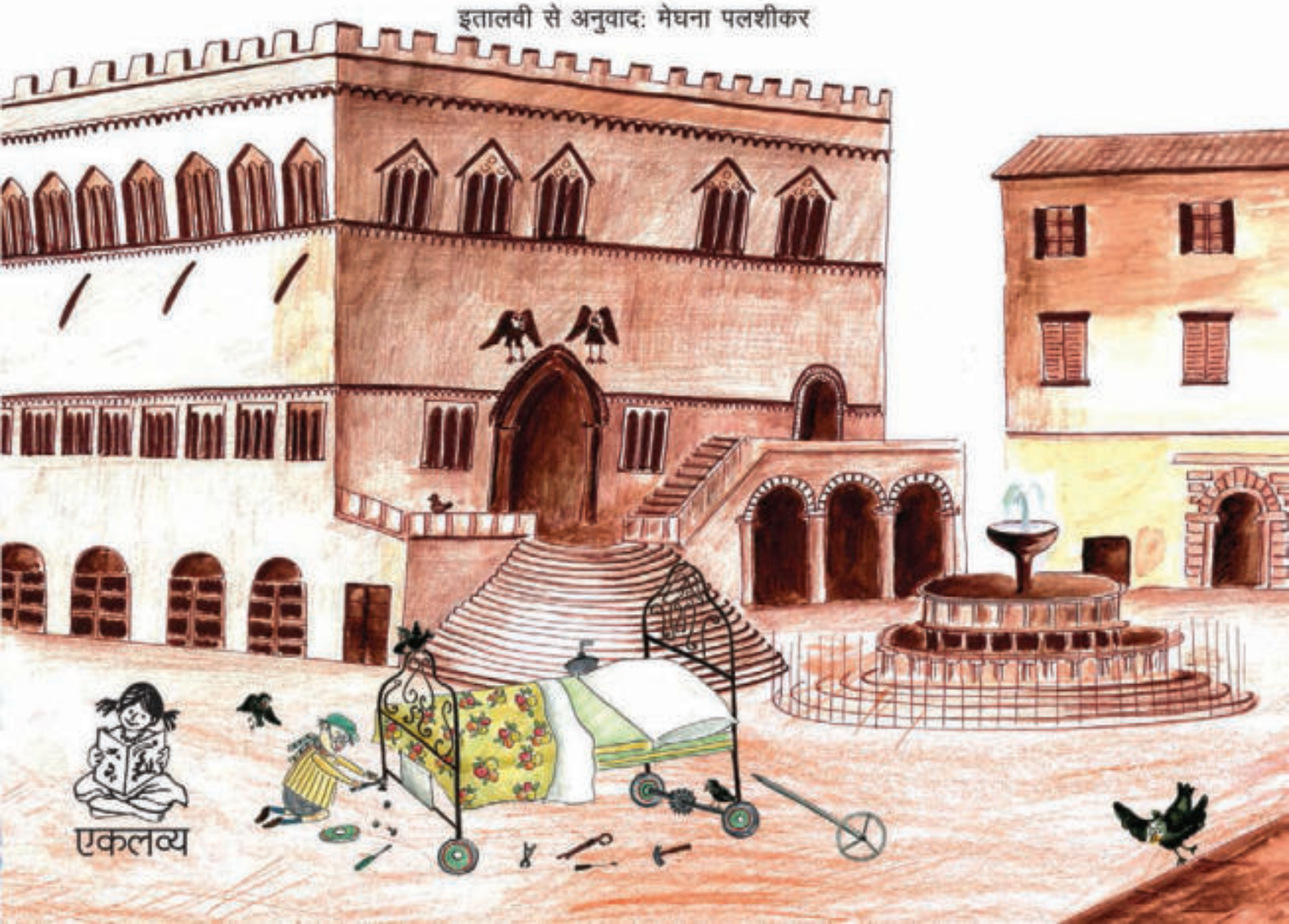

एकलव्य

INDICATORE

उड़ती चारपाई

इटली की एक सच्ची परीकथा

आंजेलो फानेल्ली

चित्र: चेचिलिया ओरसोनी

इतालवी से अनुवाद: मेघना पलशीकर

एकलव्य

सभी जानी मानी परिकथाओं की शुरुआत “कई साल पहले...” से होती है और इस कथा की शुरुआत भी बिलकुल वैसी ही है।

अनजान
परिकथाएँ

कई साल पहले..., वित्तोरियो नाम का एक बूढ़ा आदमी था।
बौना-सा, पतला-सा, मुँह में एक भी दाँत नहीं।

एक गाँव के पुराने इलाके की एक पतली-सी गली में वह रहता था।

‘बेचारा बूढ़ा!’ कभी कोई उसे ऐसा कह दे, तो वित्तोरियो को बहुत गुस्सा आता था। वह उसे अँगूठा दिखाकर कहता था, “ठेंगा! मैं और बूढ़ा?”

“फिर से ऐसा कहने की हिम्मत की, तो मैं अपनी नकली बत्तीसी मुँह में लगाकर तुम्हें काट खाऊँगा!”

“जब मैं जवान था, तब मेरे सब दाँत मज़बूत और चमकदार थे। अगर मैं ब्रश पर पेस्ट लगाकर बार-बार दाँत साफ नहीं करता, तो वे बिलकुल नहीं गिरते!”

अब तुम कहोगे, “अच्छा! मतलब वित्तोरियो ‘बेचारा बूढ़ा’ तो नहीं पर ‘पगला बूढ़ा’ ज़रूर था, क्योंकि ये तो सभी जानते हैं कि अगर दाँत साफ नहीं किए तो गिरते हैं और साफ किए तो नहीं गिरते!”

सचमुच, गाँव के लगभग सभी लोगों का यही मानना था कि वित्तोरियो पागल है।

जो भी हो, लेकिन वो ‘बेचारा बूढ़ा’ तो बिलकुल नहीं था।

“चाहे कुछ भी हो जाए,

मैं कभी ‘बेचारा बूढ़ा’ नहीं बनूँगा।”
वह कहता था।

पर सच तो ये था कि
वित्तोरियो के पास कभी-कभी
फूटी कौड़ी तक नहीं होती थी।

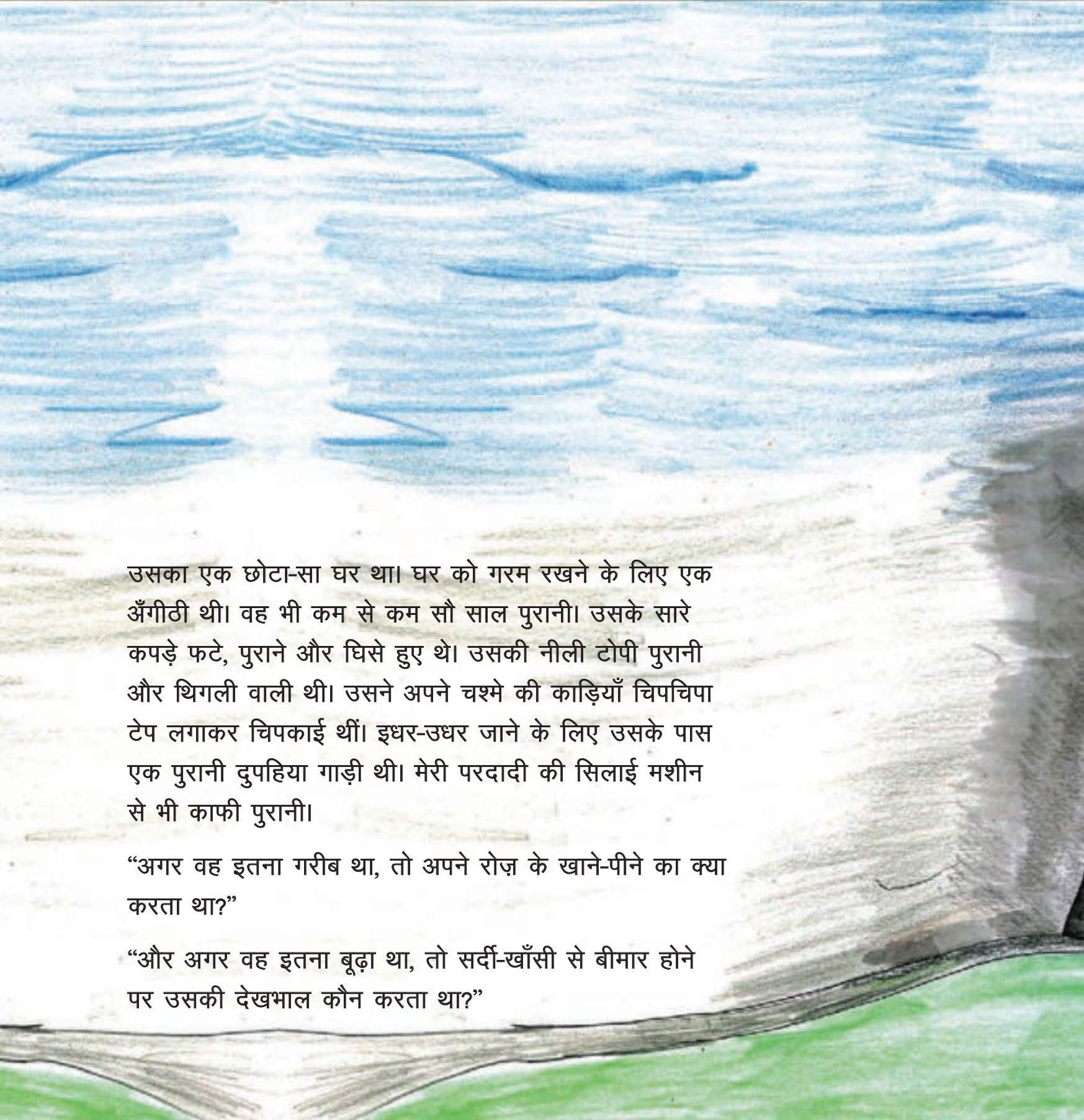

उसका एक छोटा-सा घर था। घर को गरम रखने के लिए एक अँगीठी थी। वह भी कम से कम सौ साल पुरानी। उसके सारे कपड़े फटे, पुराने और घिसे हुए थे। उसकी नीली टोपी पुरानी और थिगली वाली थी। उसने अपने चश्मे की काड़ियाँ चिपचिपा टेप लगाकर चिपकाई थीं। इधर-उधर जाने के लिए उसके पास एक पुरानी दुपहिया गाड़ी थी। मेरी परदादी की सिलाई मशीन से भी काफी पुरानी।

“अगर वह इतना गरीब था, तो अपने रोज़ के खाने-पीने का क्या करता था?”

“और अगर वह इतना बूढ़ा था, तो सर्दी-खाँसी से बीमार होने पर उसकी देखभाल कौन करता था?”

ऐसा लगता है कि आप सभी के मन में भी यही सवाल है।
तो मैं आपको पहले वित्तोरियो की वह कहानी सुनाता हूँ
जब वह बना रहा था...

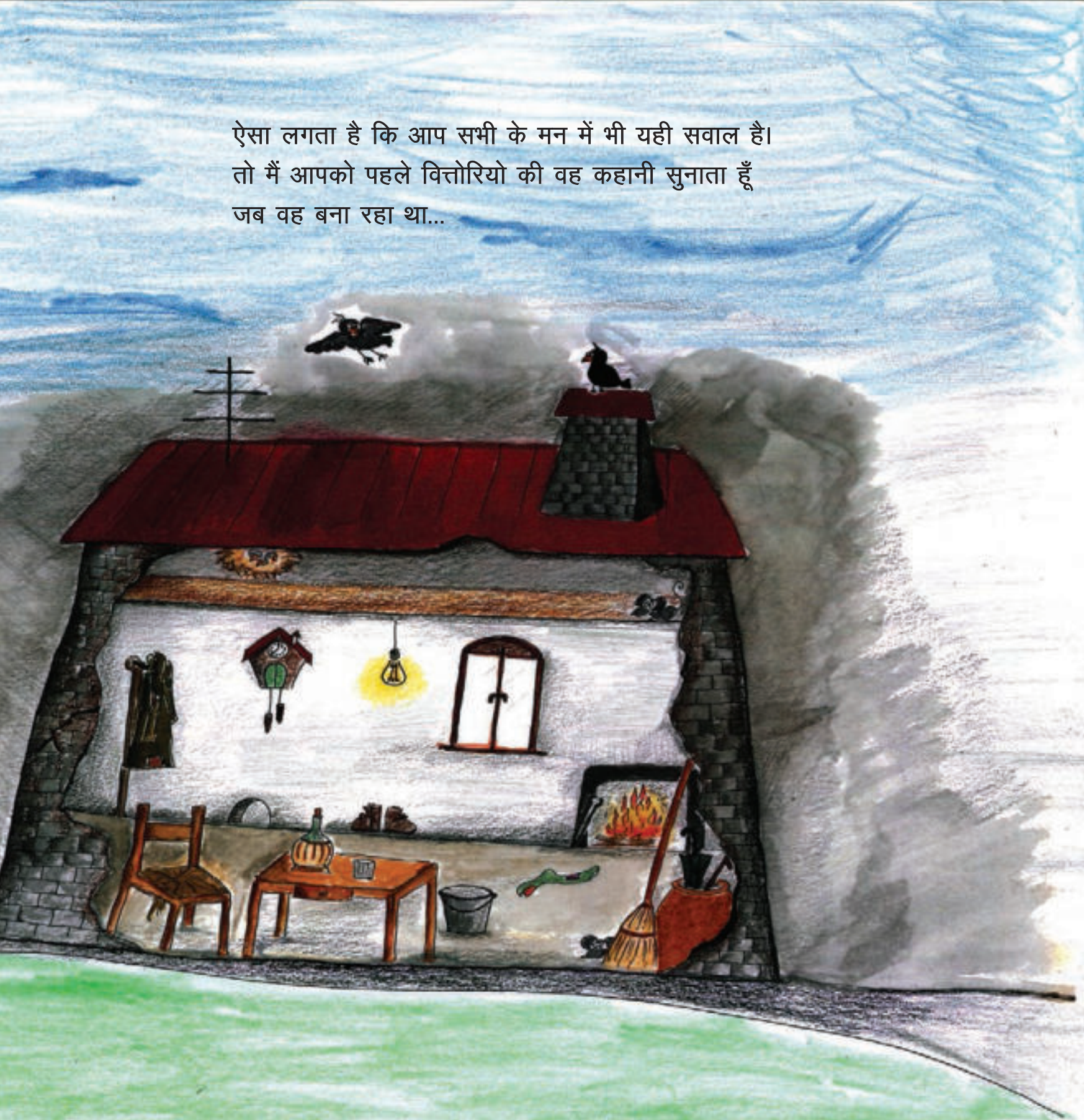

...एक उड़ती चारपाई!

“उड़ने वाली चारपाई?” तुम पूछोगे।

हाँ बिलकुल! पंख वाली चारपाई, आकाश में उड़ने वाली!

तुम ये समझो कि बौना-सा, पतला-सा, बिना दाँत वाला बूढ़ा होने के बावजूद वित्तोरियो एक अनोखा आविष्कारक भी था।

“अच्छा! यानी कि वह एक वैज्ञानिक था,” तुम कहोगे। बिलकुल नहीं! उलटा, जो कोई भी उसे वैज्ञानिक कहता, उनको अँगूठा दिखाकर वह गुस्से से कहता, “ठेंगा वैज्ञानिक! मैं बचपन में पूरे छह साल स्कूल गया हूँ।”

"अगर मैं कभी वहाँ गया नहीं होता तो मैं और भी बेहतर वैज्ञानिक बन सकता था!"

अब तुम सोचोगे, कैसा अजीब है वित्तोरियो! कितना अटपटा है। यह तो सभी जानते हैं कि वैज्ञानिक बनने के लिए बहुत पढ़ना पड़ता है।

अगर तुम कभी 'प्रसिद्ध वैज्ञानिक' किताब खोलकर देखोगे तो वित्तोरियो का नाम तुम्हें कहीं नहीं मिलेगा। भले ही उसने बहुत सारे अनोखे आविष्कार किए थे।

वह इतने सारे प्रयोग करता था कि उसका छोटा-सा घर बहुत-सी चीज़ों से भरा हुआ था – अजीब, अनोखी, निराली, विचित्र, रहस्यमयी और...

"...और?" तुम पूछोगे।

"और थोड़ी-सी डरावनी चीज़ों से भी।"

वित्तोरियो ने कहा होता। लेकिन मैं इन चीज़ों के बारे में तुम्हें बाद में बताऊँगा, 'उड़ती चारपाई' की कहानी पूरी होने पर।

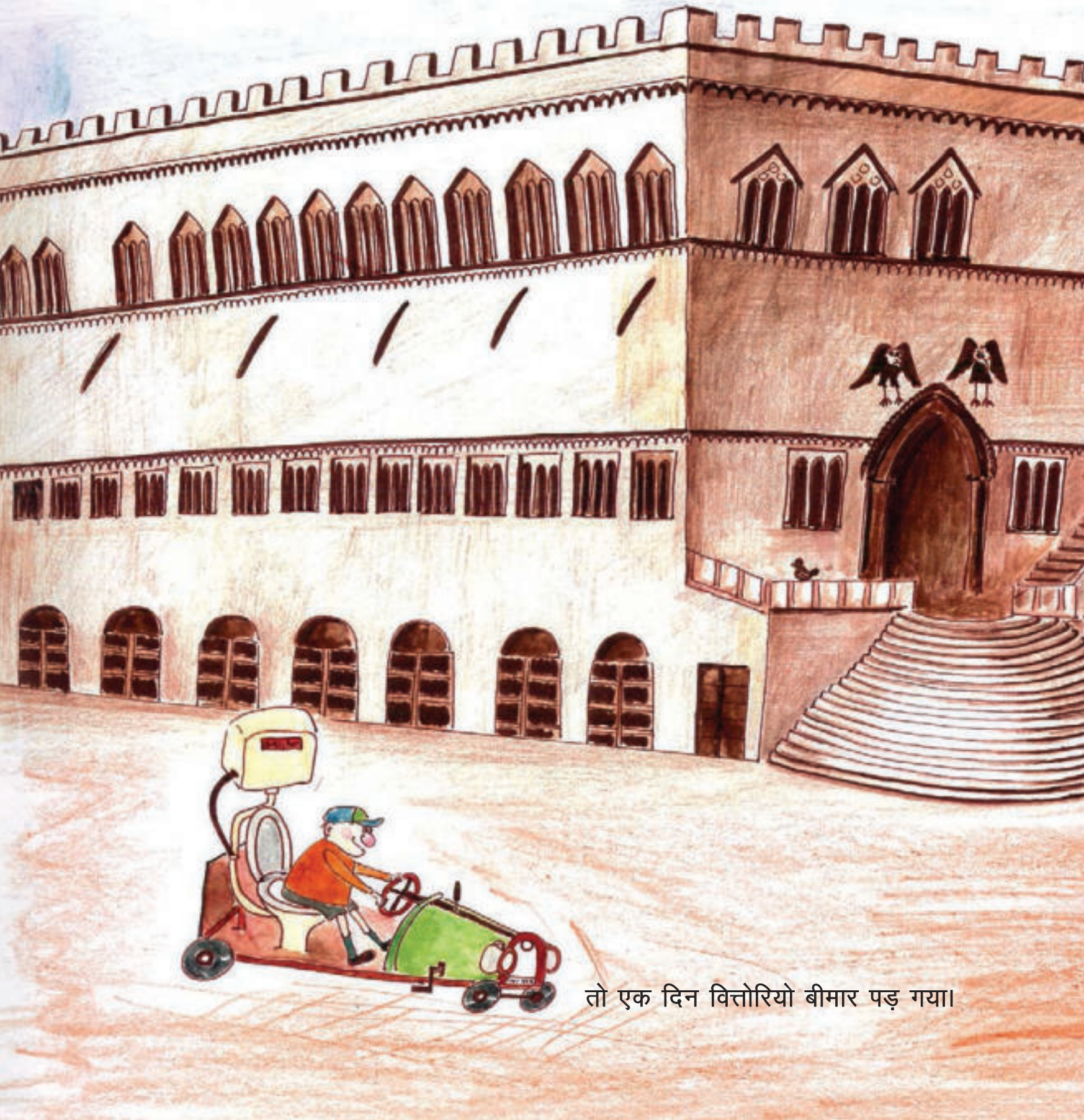

तो एक दिन वित्तोरियो बीमार पड़ गया।

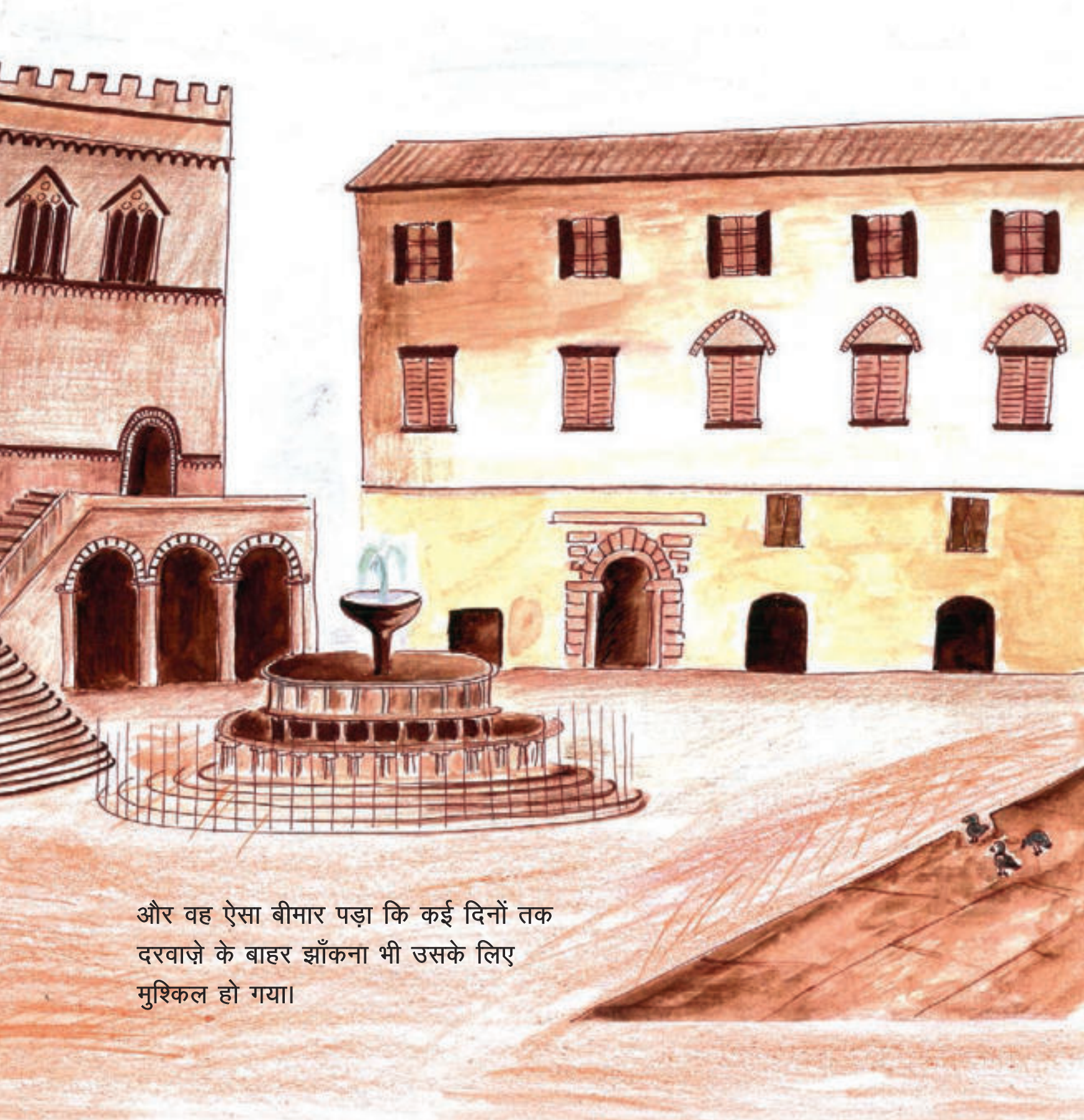

और वह ऐसा बीमार पड़ा कि कई दिनों तक
दरवाज़े के बाहर झाँकना भी उसके लिए
मुश्किल हो गया।

7
10
9
11
15
16
31
23

शुरुआत में उसने सोचा कि यह सिर्फ कुछ ही दिनों की बात है।

मैं जल्दी ही ठीक हो जाऊँगा और गाँव के चारों ओर घूमते-फिरते नए-नए प्रयोग कर सकूँगा।

“ठेंगा बीमारी! जल्दी ही मैं घूमने निकलूँगा। चलने वाला छाता या झण्डे वाली दुपहिया गाड़ी लेके या...

या शायद...”

लेकिन कई हफ्ते गुज़र गए, फिर भी वित्तोरियो बिस्तर पर पड़ा रहा। वह दुखी और उदास रहने लगा।

वह खुद के लिए अच्छा खाना भी नहीं बना पाता था। घर में बचे थे सिर्फ थोड़े-से चावल, ब्रेड और तेल।

चिपचिपा टेप खत्म हो जाने से चश्मे की काड़ियाँ भी निकल गई थीं।

खिड़की में बैठे पक्षियों को बचे हुए चावल खिलाना ही उसका एकमात्र मनोरंजन था।

उफ! बोरियत की हद हो गई! और कितना वक्त लगेगा, बीमारी ठीक होने में? वह अपने आप से पूछता और फिर से सपनों में खो जाता... घर से बाहर जाकर दौड़ लगाने का सपना... कूदने का सपना या उड़ने का सपना...। बिलकुल उसके पक्षी दोस्तों की तरह आकाश में छलाँग लगाने का सपना...।

आखिरकार, एक दिन ऐसे ही उदास विचारों में खोया हुआ वित्तोरियो अचानक बड़बड़ाने लगा, “अगर इस बीमारी का कोई अन्त नहीं है और मैं कभी ठीक नहीं होने वाला हूँ, तो घर से बाहर निकलने के लिए मेरे पास एक उड़ती चारपाई का होना ज़रूरी है।”

"एक उड़ती चारपाई? युरेका!"
वित्तोरियो उत्साह से चिल्लाया।

"युरेका का क्या मतलब है?" तुम पूछोगे।

युरेका! वित्तोरियो बिस्तर पर उलट-पुलट
करते-करते हँस रहा था।

युरेका! मिल गया रास्ता!

सुलझ गई पहेली!

'सुलझ गई पहेली!'

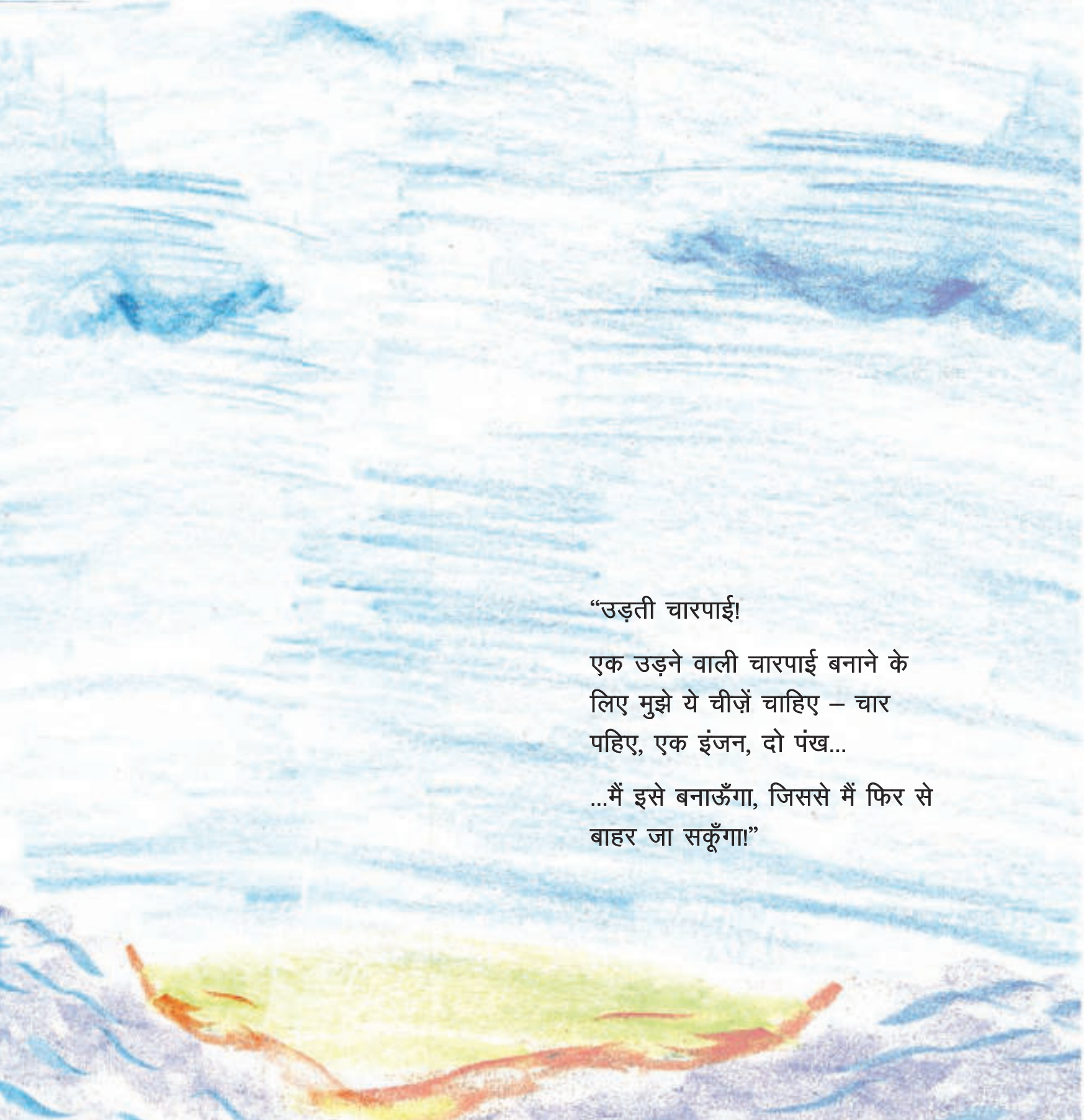

"उड़ती चारपाई!

एक उड़ने वाली चारपाई बनाने के लिए मुझे ये चीज़ें चाहिए – चार पहिए, एक इंजन, दो पंख...

...मैं इसे बनाऊँगा, जिससे मैं फिर से बाहर जा सकूँगा!"

ऐसा सोचकर वित्तोरियो ने काम शुरू किया...

सबसे पहले पहिए! कहाँ मिलेंगे पहिए? एक अच्छे मज़बूत इंजन की भी ज़रूरत है। और एक तेज़ी से चलने वाला पंखा! और पंख, वो कहाँ मिलेंगे? उनके लिए तो मैं सारी दुनिया ढूँढ लूँगा।

इसके बाद, कई दिनों तक वित्तोरियो के पड़ोसियों ने उसके घर से आने वाला अजीब शोरगुल सुना।

पक्षी मित्रों का तो सिर चकरा गया था। वे अजीब उलझन में पड़ गए थे। इस शोरगुल से डरें या इसका आनन्द उठाएँ।

फिर एक सुहानी सुबह,

वित्तोरियो के घर का दरवाज़ा खुला और सभी पड़ोसी हक्के-बक्के रह गए...!

...इंजन से चलने वाली चारपाई पर सवार, घर से बाहर निकलते हुए वित्तोरियो को देखकर।

“इंजन से चलने वाली चारपाई?”
तुम पूछोगे।

बिलकुल सही, इंजन से चलने वाली चारपाई!

वित्तोरियो ने एक चलने वाली चारपाई बनाई थी। पहिए, स्टियरिंग, शोर मचाने वाला मज़बूत इंजन और ब्रेक..., सब कुछ था उसमें।

घर में मौजूद सभी अजीब चीज़ों में से ढूँढ-ढाँढकर, चीज़ों के कुछ भागों को अलग करके, एक बौने-से, पतले-से, बिना दाँतों के बूढ़े ने उसके सोने की चारपाई को एक वाहन का रूप दिया था।

अन्त में, वह घर से बाहर निकल ही गया। हज़ार तरह के स्वादिष्ट भोजन बनाने का सामान, चश्मे के लिए चिपचिपा टेप उसने खरीद ही लिया।

“और पंखों का क्या हुआ?” तुम पूछोगे।

“वह एक उड़ती चारपाई बनाना चाहता था ना?”

हाँ, तुमने बिलकुल सही कहा, 'पंख'।

घर की समस्त वस्तुओं के बीच उसे
पंख नहीं मिल सके।

पंखों की एक जोड़ी, जिसे लगाकर
उसकी चारपाई उड़ सके।

“मेरा सपना पूरा करने के लिए मुझे
सिर्फ एक जोड़ी पंखों की ज़रूरत है,”
वह कहता था।

आज भी अगर तुम ध्यान से सुनोगे, तो चलने वाली चारपाई पर सवार, पंखों की खोज में, इधर-उधर भटकने वाले वित्तोरियो की आवाज़ तुम्हें सुनाई देगी।

और अगर तुम खुशकिस्मत हो, तो एक दिन तुम्हें चारों ओर से एक बड़ी गूँज सुनाई देगी।

तब शायद तुम पूछोगे, "ये कैसी गूँज? क्या यह एक हवाई जहाज़ है?"

“ठेंगा हवाई जहाज़!” वित्तोरियो तेज़ आवाज़ में
ज़ोर से कहेगा ताकि तुम उसे सुन सको...।

“...हाँ तुम, तुम ही मेरी मदद करो ना!
कैसे पा सकता हूँ मैं पंख?”

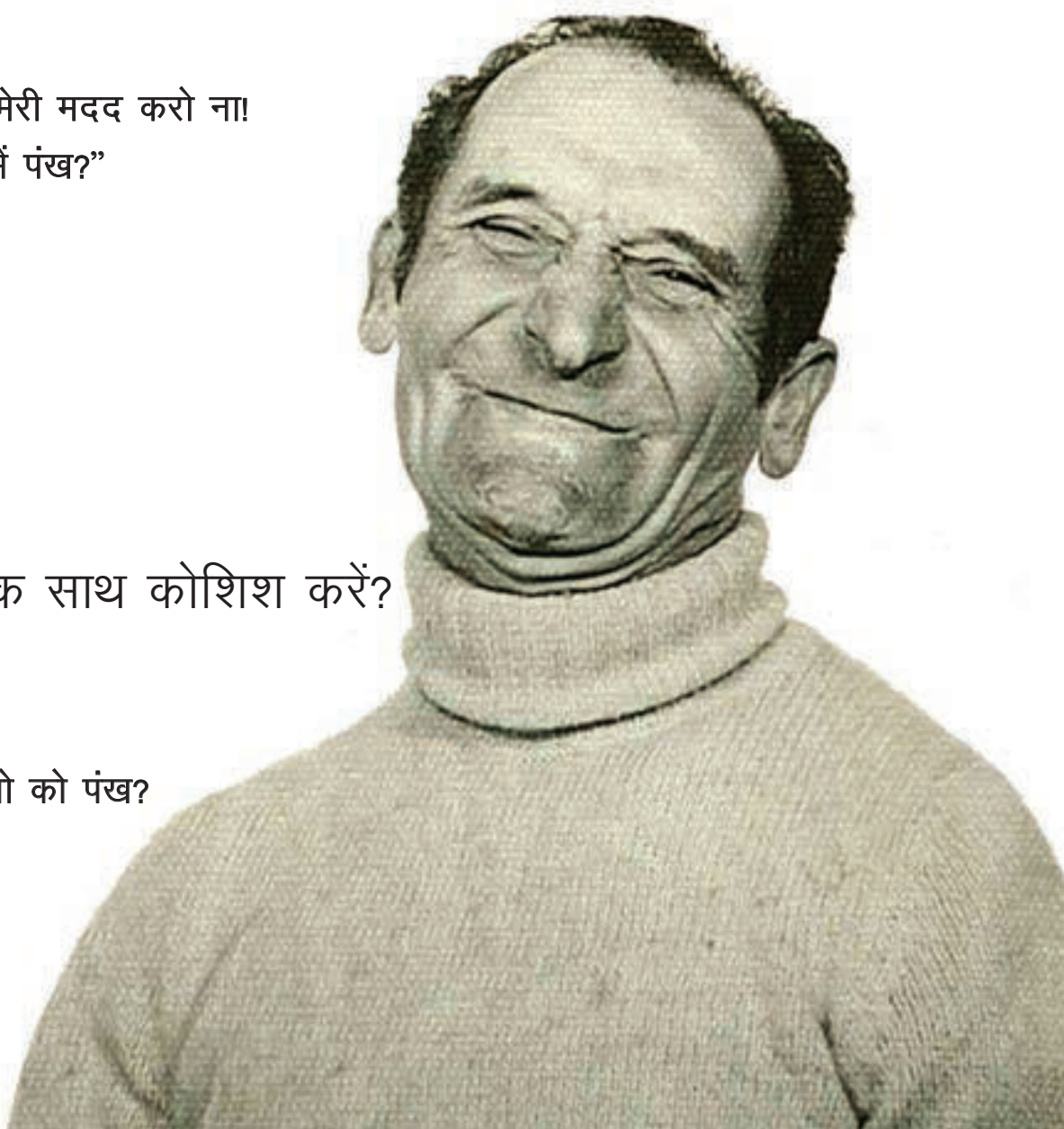

क्यों न हम सब एक साथ कोशिश करें?

कैसे मिल सकेंगे वित्तोरियो को पंख?

तुम अपनी कल्पना से यहाँ चित्र बनाओ और कहानी पूरी करो।

लेखक की ओर से

आपने ये परीकथा पढ़ ली है तो अपने आप से पूछ सकते हो कि ये दूसरी परिकथाओं से अलग क्यों है? और इस सवाल का जवाब आपको खुद ही ढूँढना पड़ेगा क्योंकि मैं अपने जवाब का सिर्फ एक छोटा-सा हिस्सा ही यहाँ दे रहा हूँ।

दरअसल, दूसरी परिकथाओं के विपरीत यह परीकथा एक सच्ची कहानी है। यह कहानी इटली के पेरूज्या गाँव में रहने वाले वित्तोरियो के जीवन की है। हमारे लिए तो वित्तोरियो आज भी हमारे बीच है। वैसे ही जैसे कुछ लोग और घटनाएँ कालातीत होती हैं। वित्तोरियो वास्तव में बीमार पड़ा था। अपनी बीमारी के दौरान लम्बे समय तक वह सोचता रहता था कि इस बीमारी से कैसे राहत मिल सकती है। तभी एक दिन उसे उड़ती चारपाई बनाने का खयाल आया। और वास्तव में उसने यह चारपाई बनाई। अभी भी हमारी संस्था 'लिबेरो पेन्सातोरे' में यह चारपाई रखी है।

वैसे आपने यह कहानी पूरी की या नहीं? चित्र बनाकर और कहानी का अन्त लिखकर? यदि नहीं की है तो आप ये ज़रूर करना क्योंकि वित्तोरियो को अपने खुद के दिमाग से सोचने वाले और अपने खुद के हाथ से महसूस करने वाले लोग पसन्द हैं। खैर मैंने ये परीकथा लिखी क्योंकि कुछ साल पहले मेरी वित्तोरियो से मुलाकात हुई और इसके बाद उत्साह बढ़ाने वाली कई सारी घटनाएँ मेरे साथ हुईं। मैंने वित्तोरियो के विचार और काम के बारे में किताबें लिखीं, फिल्में बनाईं, अनूठे सृजनात्मक आविष्कार के लिए पुरस्कार शुरू किया...। और ये जो कहानी आपने अभी पढ़ी उस पर आधारित एक नुक्कड़ नाटक बनाया जो अभी भी इटली की सड़कों पर घूम रहा है।

इस परीकथा और नाटक का लक्ष्य बीमार बच्चों की मदद करना है। बीमारी और मानसिक स्वास्थ्य से पीड़ित किसी भी व्यक्ति की सहायता – फिर वो कितनी भी छोटी क्यों न हो – हमें ज़रूर करनी चाहिए। आपका कोई दोस्त या रिश्तेदार बीमार हो तो आप उनको यह किताब पढ़कर सुना सकते हैं। मेरा विश्वास है कि यह कहानी सुनकर वे यकीनन प्रफुल्लित होंगे। और क्या पता, एक दिन आप इस किताब पर आधारित किसी नुक्कड़ नाटक के साथ भारत की सड़कों पर घूम रहे हों।

खैर, मैं बस इतना ही कहना चाहता था। आप सोच सकते हो, यदि वित्तोरियो आज होता तो वह यह जानकर कितना खुश होता कि उसकी कहानी दुनिया के दूसरे कोने में पहुँच गई है।

मैं मेघना को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इस कहानी का हिन्दी में अनुवाद किया। मैं एकलव्य को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इटली के इस चारपाई बनाने वाले की कहानी में दिलचस्पी दिखाई।

और आखिर में वित्तोरियो गोरिनी। वे 1916 में पेरूज्या में जन्मे। उन्होंने अपने दिमाग और हाथ के आविष्कारों से जीवनभर आनन्द फैलाने और लोगों की पीड़ा को कम करने का काम किया।

आंजेलो फानेल्ली
पेरूज्या, अप्रैल 2018

ज़ोए के लिए - आंजेलो

बाबा के लिए - मेघना

उड़ती चारपाई

UDATI CHARPAI

कहानी: आंजेलो फानेल्ली
चित्र: चेचिलिया ओरसोनी
इतालवी से अनुवाद: मेघना पलशीकर
सम्पादन: सीमा और शिवनारायण गौर

© [Il Letto Volante. Dall'Umbria, una favola vera, Angelo Fanelli & Cecilia Orsoni © 2017 6th edition, liberopensatore.it]

© हिन्दी अनुवाद: मेघना पलशीकर

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: नवम्बर 2019/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 300 gsm एफबी बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-87926-12-7
मूल्य: ₹ 85.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72-73 www.eklavya.in/ books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

आंजेलो फानेल्ली

आंजेलो फानेल्ली (पेरूज्या, इटली 1968) भाषा अध्यापन और भाषाशास्त्र के क्षेत्र से जुड़े हैं। पेरूज्या स्थित संस्था 'लिबेरो पेन्सातोरे' (मुक्त विचारक) के संस्थापक सदस्य हैं। संस्था वित्तोरियो गोरिनी के विचार और कार्य का अभ्यास करती है।

चेचिलिया ओरसोनी

चेचिलिया ओरसोनी (फ्लोरेन्स, इटली 1968) बच्चों की किताबों के लिए चित्र बनाती हैं। साथ ही अनाथ बच्चों को पढ़ाती हैं।

ये कहानी है एक बौने-से, पतले-से, बिना दाँत के बूढ़े आदमी की, जिसने इंजन से चलने वाली चारपाई बनाकर अपनी बीमारी को हरा दिया।

एकलव्य

मूल्य: ₹ 85.00

9 789387 926127

parag